नगरीय समाज की लाक्षणिक विशेषताएँ
(Characteristic features of urban community)

जिस प्रकार ग्रामीण समाज से हमारा अभिप्राय ग्रामीण समुदाय में रहने वाले लोगों के बीच पाये जाने वाले संबंधों की व्यवस्था से हैं, उसी प्रकार नगरीय समाज का अर्थ भी नगरीय समुदाय में रहने वाले मनुष्यों के बीच पाए जाने वाले संबंधो की व्यवस्था से हैं। नगरीय समाज क्या है? इसे स्पष्ट करने के लिये इतना भर कहना पर्याप्त नहीं है। नगरीय समाज नगरीय लोगों की जीवन शैली और जटिल सामाजिक आर्थिक व्यवस्था से जाना जाता है। इनके अतिरिक्त और भी विशेषताएँ हैं जो नगरीय समाज को विशेष पहचान प्रदान करती हैं। नगरीय समाज की यह प्रमुख लाक्षणिक विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

अधिक जनसंख्या और बड़ा आकार - नगरीय समाज का आकार बड़ा होता है। यहाँ जनसंख्या तुलनात्मक रूप से अधिक होती है। जैसे ही हम किसी आवासीय बस्ती को नगर कहते हैं वैसे ही यह स्पष्ट होता है कि यहाँ बड़ी संख्या में लोग रहते हैं अर्थात् यहाँ की जनसंख्या अधिक है।

अप्रत्यक्ष और औपचारिक संबंध- अधिक जनसंख्या के कारण नगर के लोगों के बीच प्रत्यक्ष या आमने सामने के सबंध नहीं होते हैं। वे एक दूसरे को भली-भाँति नहीं जानते है। यहाँ तक कि एक ही मोहल्ला या कॉलोनी या बहुमंजिल भवन में रहने

वाले पड़ौसी तक एक-दूसरे को नहीं जानते हैं। इसीलिये उनके बीच संबंध औपचारिक या स्वार्थ और हितों पर केन्द्रित होते हैं।

अत्यधिक भीड़-भाड़- नगरीय समाज में जनसंख्या अधिक होती है जबकि नगर का क्षेत्रफल कम होता है। इसीलिये मकान प्रायः परस्पर जुड़े होते हैं। जनसंख्या की तुलना में साधन जैसे बस, अस्पताल, आदि कम होते हैं। इसलिये चाहे सड़क हो या दुकान, बस हो या रेल, अस्पताल हो या बैंक, सर्वत्र भीड़-भाड़ रहती है। इसीलिए लोगों के जीवन में व्यस्तता भी बहुत अधिक रहती है।

जटिलता - नगरीय समाज में समरूपता कम पाई जाती है जबकि विविधता अधिक दिखाई देती है। नगरीय समाज के सदस्यों में भाषाई, आंचलिक, प्रादेशिक, धार्मिक, जातीय, व्यावसायिक, शैक्षणिक, जीवन स्तर संबंधी आदि अनेक भिन्नताएँ पाई जाती हैं। लोगों में अनौपचारिक नहीं बल्कि औपचारिक संबंध पाये जाते हैं। लोगों के बीच संबंध हितों पर आधारित होते हैं। धन का अधिक महत्व है। व्यक्ति परस्पर संबंधों से संबंधित न होकर एक-दूसरे के साथ पद, स्थिति, ऊँच-नीच का संस्तरण आदि आधार पर संबंधित होते हैं। शिक्षा, चिकित्सा, जल, रोशनी, यातायात आदि सुविधाओं के लिये शुल्क चुकाना पड़ता है, आदि। समाचार जानने के लिये लोग अखबार, रेडियो, दूरदर्शन, पत्र-पत्रिकाएँ आदि पर निर्भर करते हैं; न कि वैयक्तिक सूचनाओं पर। दैनंदिन जीवन में मशीनों का अधिकाधिक उपयोग किया जाता है। श्रम का विशेषीकरण होता है। व्यक्ति की पूरी दिनचर्या बँधी-बँधाई होती है। व्यक्ति सुबह से शाम तक मशीन की तरह कार्य करता रहता है। इन सबके फलस्वरूप नगरीय समाज में सरलता नहीं जटिलता पाई जाती है।

धन का अधिक महत्तव- नगरीय समाज में सभी सेवाएँ सशुल्क होती हैं। कोई भी सेवा प्रायः निःशुल्क नहीं होती है। जिनके पास अधिक धन हो, उनका जीवन सुखमय होता है। निर्धनों की जिंदगी फुटपाथ पर गुजरती है। नगरीय समाज में व्यक्ति की स्थिति का आकलन उसकी आर्थिक स्थिति के आधार पर किया जाता है। इसीलिये नगरीय लोगों की अधिकांश क्रियाएँ धन कमाने और धन संचय पर केन्द्रित रहती है। व्यक्ति बॉण्ड, म्युचुअल फण्ड. बी. सी. और बैंकों के द्वारा प्रदत्त सुविधाओं से धन संचय का प्रयास करते हैं। इसीलिये नगरीय समाज में संबंधों की अपेक्षा धन का अधिक महत्व होता है।

वर्गात्मक सामाजिक व्यवस्था- वर्गात्मक सामाजिक व्यवस्था से तात्पर्य उस व्यवस्था से है जिसमें सामजिक संरचना वर्गों पर आधारित होती है। हम भलीभाँति जानते हैं कि एक समान आर्थिक या शैक्षणिक, व्यावसायिक आदि स्थिति रखनें वाले समूह को वर्ग कहा जाता है। जैसे प्राध्यापकों का वर्ग, चिकित्सकों का वर्ग, मजदूर

वर्ग, पूँजीपति वर्ग, शिक्षित वर्ग, छात्र वर्ग, महिला वर्ग आदि। नगरीय समाज में इसी प्रकार योग्यताओं क्षमताओं, आर्थिक स्थिति, कार्य आदि के आधार पर अनेक वर्ग होते हैं। नगरीय समाज में व्यक्ति इन वर्गों के सदस्य होते हैं। व्यक्ति एक साथ अनेक वर्गों का सदस्य हो सकता है। उदाहरणस्वरूप, एक व्यक्ति शिक्षित होने के कारण शिक्षित वर्ग का, चिकित्सक होने के कारण चिकित्सक वर्ग का, धनवान होने के कारण धनी वर्ग आदि का सदस्य होता है। नगरीय समाज में व्यक्ति की वर्गात्मक सदस्यता स्थायी नहीं होती है। यदि अशिक्षित व्यक्ति शिक्षित हो जाए, निर्धन धनवान हो जाए, कोई व्यक्ति नौकरी छोड़कर व्यापार करने लग जाएँ, तो उसकी वर्गात्मक सदस्यता भी बदल जाती है। इस प्रकार नगरीय समाज में वर्गों का अधिक महत्व होता है।

सामाजिक असमानता और भेदभाव - नगरीय समाज में न केवल वर्गात्मक भेदभाव पाया जाता है बल्कि असमानता भी पाई जाती है। ग्रामीण समाज में भी जातीय और आर्थिक आधार पर भिन्नता और भेदभाव पाया जाता है। परंतु दैनंदिन जीवन में खान-पान, वेषभूषा, बोली, जीवनस्तर शैक्षणिक स्तर आदि में असमानता अधिक नहीं होती है। नगरीय व्यक्ति पारस्परिक संबंधों के निर्वाह में पद, कार्य, आय, घर में भौतिक सुख-सुविधा के साधन जैसे मकान का आकार-प्रकार, फ्रिज, ए. सी., टी. वी. का आकार-प्रकार, कार आदि के आधार पर उच्च या निम्न होने की भावना रखते हैं।

विभिन्नता का संकुल - नगरीय समाज के स्थानीय सदस्य कम ही होते हैं। प्रायः बहुसंख्यक व्यक्ति, रोजगार, व्यापार-व्यवसाय, उद्योग-धंधों, शिक्षा की सुविधा या अन्य कारणों से विभिन्न ग्रामों, प्रदेशों और अंचलों से नगर में आकर रहते हैं। इनमें जाति, भाषा, धर्म, व्यवसाय, शिक्षा आदि के आधार पर भिन्नता होती है।

नियंत्रण के द्वैतीयक साधन - जनसंख्या की अधिकता और असमानता के कारण नगरीय समाज में धर्म, प्रथाओं, परम्पराओं आदि के आधार पर व्यक्तियों और समूहों को नियंत्रित नहीं किया जा सकता है। उन्हें पुलिस, न्यायालय, कानून आदि द्वैतीयक साधनों से नियंत्रित किया जाता है।

वैचारिक खुलापन- नगरीय समाज में व्यक्ति को सोचने-समझने और अभिव्यक्ति की अधिक स्वतंत्रता होती है। इसी प्रकार मीडिया और साहित्य उन्हें नवीनतम जानकारी प्रदान करता है। व्यक्ति के समक्ष व्यक्तित्व के विकास के अनेक अवसर होते हैं। फलतः नगरीय समाज के सदस्यों में अधिक वैचारिक खुलापन होता है। वे बिना किसी लाग-लपेट के अपने विचार व्यक्त करते हैं।

तर्कपरकता- सामान्यतः नगरीय व्यक्ति अंधविश्वासी नहीं होते हैं। शिक्षा के कारण उनका मानसिक स्तर अच्छा होता है। प्रेस और दूरदर्शन के कारण उन्हें अपने

विचार या धारणाएँ बनाने में सहायता मिलती है। फलस्वरूप, नगरीय समाज के सदस्यों में अधिक तर्कपरकता होती है। जब तक कोई बात तर्क की कसौटी पर खरी न उतरे तब तक वे उसे स्वीकार नहीं करते हैं।

अधिक सामाजिक गतिशीलता - नगर की विशाल जनसंख्या में किसी व्यक्ति की जाति का सहज पता नहीं लगता। नगरीय समाज में वैसे भी जाति महत्वपूर्ण नहीं रह गई है। व्यक्ति की शिक्षा-दीक्षा, उसका प्रौद्योगिकीय ज्ञान, उसकी विशेषज्ञता आदि महत्वपूर्ण होती है। इसी प्रकार दैनंदिनी जीवन में विभिन्न जातियों और धर्मों के व्यक्तियों के बीच पारस्परिक सम्पर्क रहता है।

नगरीय समाज में जातीय व्यवसाय करना आवश्यक नहीं होता है। व्यक्ति किसी भी जाति का क्यों न हो, उसे अपनी योग्यता के अनुसार कार्य प्राप्त करने का अधिकार होता है। इसीलिये नगरीय व्यक्ति संकीर्ण मानसिकता के नहीं होते हैं। सब प्रकार के व्यवसायों में सब जातियों के लोग होते हैं। एक व्यवसाय त्याग कर दूसरा व्यवसाय प्राप्त करने के अवसर होते हैं। विभिन्न जातियों और धर्मों के लोगों के बीच खान-पान के संबंध होते हैं। उद्योगों और कार्यालयों में स्त्री-पुरुष साथ-साथ कार्य करते हैं। सहशिक्षा होती है। इस खुलेपन के कारण नगरीय समाज में अन्तर्जातीय और अन्तर्धार्मिक विवाहों का भी प्रचलन है। यह सब तथ्य प्रगट करते हैं कि नगरीय समाज में अधिक सामाजिक गतिशीलता पाई जाती है।

व्यक्तिवादिता- नगरीय समाज में व्यक्ति अधिक आत्मकेन्द्रित होते हैं। व्यक्ति हर कार्य को अपने वैयक्तिक लाभ-हानि को सोच कर करता है। इसलिये नगरीय समाज में सामूहिक हित की अपेक्षा अपने वैयक्तिक हितों पर व्यक्ति अधिक ध्यान देते हैं। शिक्षा और व्यवसाय के अधिक अवसर, निश्चित आमदनी और सुरक्षित भविष्य आदि के कारण नगरीय समाज के सदस्य तुलनात्मक रूप में अधिक व्यक्तिवादी होते हैं। यही कारण है कि उनमें सामुदायिक भावना भी कम पाई जाती है।

चारित्रिक और नैतिक मूल्यों तथा सहिष्णुता की कमी- व्यक्तिवादिता के कारण व्यक्ति स्वार्थी होते हैं। नगरीय समाज के सदस्य प्रायः यह चिन्ता नहीं करते हैं कि उनके कार्यों से अन्यों को हानि पहुँचेगी। उन्हें अपने हित या उद्देश्य को पूर्ण करने की चिन्ता रहती है। इसीलिये नगरीय समाज में सफेदपोश अफराध, बलात्कार, भाई-भतीजावाद, हिंसा और भ्रष्टाचार अधिक होता है। यहाँ तक कि हम पड़ौसी के हितों का भी ध्यान नहीं रखते हैं। पड़ौस में यदि कोई बीमार हो या किसी प्रकार संकट में हो तो भी हम इस बात की चिंता नहीं करते हैं कि टी. वी. पर या म्युजिक सिस्टम पर तेज आवाज में संगीत सुनने से उन्हें परेशानी हो सकती है। पड़ौसी एक दूसरे को नहीं जानते हैं, यह असहिष्णुता का ही दूसरा उदाहरण है। नगरीय समाज के सदस्य धार्मिक विधि विधानों,

संस्कारों, तीज-त्यौहारों, प्रथाओं, परम्पराओं के प्रति अधिक निष्ठावान नहीं होते हैं। यहाँ तक कि अपने परिवार के बड़े-बुजुर्गों के प्रति भी उनके मन में सहिष्णुता सीमित होती है। इसीलिये नगरीय समाज में चारित्रिक और नैतिक मूल्यों का स्तर निम्न होता है।

एकाकी परिवार- अपर्याप्त आवास, सीमित आय, ग्राम से नगर में आव्रजन, शिक्षा, व्यक्तिवादी मूल्य, सुखमय जीवन की कामना, स्त्रियों का रोजगार करना, परिवार पर बड़े-बुजुर्गो के नियंत्रण की कमी आदि के कारण नगरीय समाज में संयुक्त परिवारों की तुलना में एकाकी परिवारों का प्रचलन अधिक है।

वृद्धावस्था की समस्या - एकाकी परिवारों का अधिक प्रचलन, वैयक्तिक स्वार्थ, स्वतंत्र रहने की भावना, विलासी जीवन, व्यक्तिवादिता, महिलाओं का नौकरी करना आदि के कारण नगरीय परिवारों में वृद्धों को बोझतुल्य माना जाता है। इसीलिये नगरीय समाज में वृद्धाश्रमों की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है।

प्रतिस्पर्द्धात्मक जीवन- नगरीय समाज में अवसर व्यक्ति के सामने उपस्थित नहीं होते हैं, उन्हें स्वयं अवसर प्राप्त करने पड़ते हैं। व्यक्तियों में आगे बढ़ने की तीव्र इच्छा होती है। सभी क्षेत्रों में व्यक्ति एक दूसरे से आगे बढ़ने और अच्छे से अच्छे अवसर प्राप्त करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। इस कारण नगर में प्रतिस्पर्द्धात्मक दशाएँ रहती हैं।

कार्य का निर्धारित समय- ग्रामीण समाज में प्रतिदिन किये जाने वाले कार्य के कोई निर्धारित घण्टे या अवधि नहीं होती है। नगरीय समाज में कार्य के निर्धारित घण्टे होते हैं। इसी प्रकार साप्ताहिक अवकाश होता है।

निर्धारित पारिश्रमिक- ग्रामीण समाज में कृषि कार्य या शिल्प, उद्योग में कार्यरत व्यक्तियों का कोई निश्चित पारिश्रमिक नहीं होता है। नगरीय समाज में प्रत्येक कार्य या सेवा का निर्धारित पारिश्रमिक होता है।

अधिक नागरिक सुविधाएँ- ग्रामीण समाज की तुलना में नगरीय समाज में व्यक्तियों को अधिक नागरिक सुविधाएँ प्राप्त रहती है। शिक्षा, चिकित्सा, बिजली, पानी, सड़कें, आवागमन के साधन, दूर-संचार, डाकतार की सुविधाएँ आदि नगरीय समाज में अधिक उपलब्ध हैं। परंतु अब धीरे-धीरे इन सुविधाओं का विस्तार ग्रामीण समाज में भी हो रहा है।

शिक्षा और प्रौद्योगिकी ज्ञान का अधिक महत्व- नगरीय समाज के सदस्य बड़ी संख्या में नौकरियों पर निर्भर रहते हैं। नौकरी चाहे वह शासकीय कार्यालयों, प्रशासन, पुलिस, न्यायपालिका से संबंधित हों अथवा व्यापारिक प्रतिष्ठानों और उद्योग धन्धों से। इनमें नियुक्ति का आधार वैयक्तिक योग्यताएँ और क्षमताएँ होती हैं। इसीलिये नगरीय समाज में तकनीकी और गैर तकनीकी सामान्य शिक्षा का अधिक महत्व है।

नगरीय समाज में अशिक्षितों का कोई भविष्य नहीं होता है। उनकी सामाजिक स्थिति भी हेय होती है।

अधिक राजनीतिक जागरूकता - नगर राजनीतिक दलों का कार्यस्थल होता है। इसीलिये नगरीय समाज के सदस्यों में अधिक राजनीतिक जागरूकता होती है। अब इस स्थिति में परिवर्तन हो रहा है। ग्राम स्तर तक सत्ता के विकेन्द्रीकरण के कारण राजनीतिक दलों ने अपनी गतिविधियाँ ग्रामों तक प्रसारित की हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा, प्रौढ शिक्षा, शासकीय प्रचार माध्यम और अखबार, रेडियो, दूरदर्शन चेनल्स आदि के कारण ग्रामीण जनता भी अपने अधिकारों, सुविधाओं और मतदाता के रूप में अपने महत्व के प्रति अधिकाधिक जागरूक हो रहे हैं। दलित आन्दोलन तथा दलितों के उद्धार संबंधी योजनाओं ने नगरीय एवं ग्रामीण समाज के दलित वर्गों में राजनीतिक चेतना के विकास में योगदान दिया है।

श्रम का विशेषीकरण- ग्रामीण समाज के सदस्य हर फन मौला होते हैं। नगरीय समाज के सदस्य इस प्रकार बहुधंधीय नहीं होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी विशेष प्रकार के कार्य से ही आजीविका अर्जित करता है। उदाहरणस्वरूप— चिकित्सक, शिक्षक, इंजीनियर, मैकेनिक आदि। कल-कारखाने में अलग-अलग मजदूरों के अलग अलग कार्य होते हैं। इसी प्रकार कार्यालयों और औद्योगिक प्रतिष्ठानों में भी कार्य का विभाजन होता है। इस कार्य विभाजन के अनुसार ही व्यक्ति की स्थिति, पद, कार्य और पारिश्रमिक सुनिश्चित होता है। इसीलिये व्यक्ति एक दूसरे के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करते हैं।

विशिष्ट समस्याएँ- नगरीय समाज में अत्यधिक भीड़-भाड़, छोटे और अपर्याप्त आवास, गंदी बस्तियाँ, मादक द्रव्यों का व्यसन, शराबखोरी, यौन अपराध, भ्रष्टाचार, प्रदूषण, औद्योगिक दुर्घटनाएँ आदि अनेक प्रकार की समस्याएँ होती है।

छोटे परिवार - नगरीय समाज में इस प्रकार की परिस्थितियाँ होती हैं कि वहाँ बड़े परिवार का निर्वाह नहीं हो सकता है। छोटे और अपर्याप्त मकान, व्यक्तिवादिता, पारस्परिक सहयोग और सहिष्णुता की कमी, सीमित आय, बच्चों की शिक्षा-दीक्षा संबंधी अभिभावकों की जिम्मेदारी, खर्चीली जीवन पद्धति, स्त्रियों की स्वतंत्र गृहस्थी बसाने की आकांक्षा, अत्यधिक भौतिकवादी मूल्य आदि के कारण नगरीय समाज में संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है और एकाकी परिवारों की संख्या बढ़ रही है। परिवारों को सीमित रखने के प्रति जागरूकता के कारण छोटे परिवारों का प्रचलन भी नगरीय समाज में अधिक है।

प्रथाओं, परम्पराओं में परिवर्तन- नगरीय समाज के सदस्यों में परम्पराओं, प्रथाओं, तीज-त्यौहार और संस्कारों के सम्पादन के प्रति पारम्परिक निष्ठा में निरंतर कमी

हो रही है। इन्हें मनाने के प्रति श्रद्धा और धार्मिक आस्था के स्थान पर मनोरंजन का उद्देश्य हो गया है। संस्कारों की संख्या घट कर जन्म, नामकरण, विवाह और मृत्यु तक सीमित हो गई है। विवाह आयोजन भी एक दिन में, सच कहें तो कुछ ही घण्टों में निपटा दिया जाता है। विवाह का मुख्य आयोजन प्रीतिभोज बन गया है। स्त्रियाँ भी इन आयोजनों को परम्परागत रूप में मनाने के प्रति अधिक उत्सुक नहीं रहती हैं।

जातिगत संस्तरण का अभाव - नगरीय सामाजिक व्यवस्था जाति प्रधान नहीं बल्कि वर्ग प्रधान होती है। नगरीय समाज में जाति का महत्व केवल विवाह संबंध तय करने तक सीमित रह गया है। नगरीय समाज में किसी की जाति के विषय में पूछना अशिष्टता माना जाता है। व्यक्ति अपनी जाति छुपाने के लिये अपने जातीय नाम या सर्नेम बदल लेते हैं। नगरीय समाज में व्यक्ति किसी भी जाति का क्यों न हो वह कोई भी व्यवसाय अपना सकता है। अस्पृश्यता तो नगरीय समाज से लगभग समाप्त हो चुकी है।

स्त्री-पुरुष संबंधों में परिवर्तन - नगरीय समाज में लड़के और लड़की के बीच भेद प्रायः नहीं किया जाता है। वे सब अवसर और सुविधाएँ जो लड़कों को प्राप्त हैं, लड़कियों को भी दी जाती हैं। शिक्षा, आवागमन, वाहन चलाना, नौकरी करना आदि सुविधाएँ लड़कियों को भी प्राप्त हैं। नगरीय समाज में सहशिक्षा, लड़के -लड़कियों के बीच मित्रता को बुरा नहीं माना जाता है।

नगरीय समाज में पति -पत्नी की पारम्परिक स्थिति में भी परिवर्तन हुआ है। पति-पत्नी के बीच समता आधारित मित्रवत् संबंध होते हैं। पारिवारिक व्यवस्था के संचालन में पत्नी की सलाह ली जातीं है। स्त्रियाँ पारिवारिक व्यवस्था, खरीददारी, आर्थिक लेन-देन का कार्य करती हैं। वे नौकरी कर आर्थिक आय अर्जित करती हैं। स्त्रियों का पुरुष सहकर्मियों के साथ कार्य करना, सभा-बैठकों में सम्मिलित होना, उनके साथ आना-जाना आदि बुरा नहीं माना जाता है। नगरीय समाज में परिवार के बच्चों की शिक्षा का दायित्व मुख्यतः स्त्रियों का होता है। बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करना, स्कूल पहुँचाना, शिक्षक-शिक्षिकाओं से मिलकर प्रगति जानना, शिक्षा संबंधी आवश्यक वस्तुएँ बच्चों को उपलब्ध कराना, उनका गृह-कार्य (होमवर्क) करवाना आदि शैक्षिक कार्य अधिकांशतः स्त्रियाँ ही करती हैं। इन मामलों में पति प्रायः हस्तक्षेप नहीं करते हैं।

महिलाओं की उच्च स्थिति- शिक्षा, व्यक्तित्व विकास के अवसर, रोजगार प्राप्त करने की सुविधा, परिवारों का अधिक लोकतांत्रिक स्वरूप, पति पत्नी के बीच मित्रवत् संबंध, स्त्रियों का आय अर्जित करना, पारिवारिक व्यवस्था, बच्चों की देखभाल और उनकी शिक्षा में योगदान, एकाकी और छोटा परिवार, नौकरों की सहायता, सुख-सुविधा के इलेक्ट्रॉनिक उपकरण, बाजार में रसोई की बनी-बनाई वस्तुओं की

उपलब्धता आधुनिक जीवन- पद्धति आदि के कारण नगरीय समाज में स्त्रियों की स्थिति ग्रामीण समाज की स्त्रियों की अपेक्षा उच्च और सम्माननीय होती है।

उपर्युक्त विशेषताएँ नगरीय समाज की लाक्षणिक विशेषताएं हैं। इन विशेषताओं के आधार पर नगरीय समाज को पहिचाना जा सकता है।